विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर
समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६६

नित नवल कुणाल

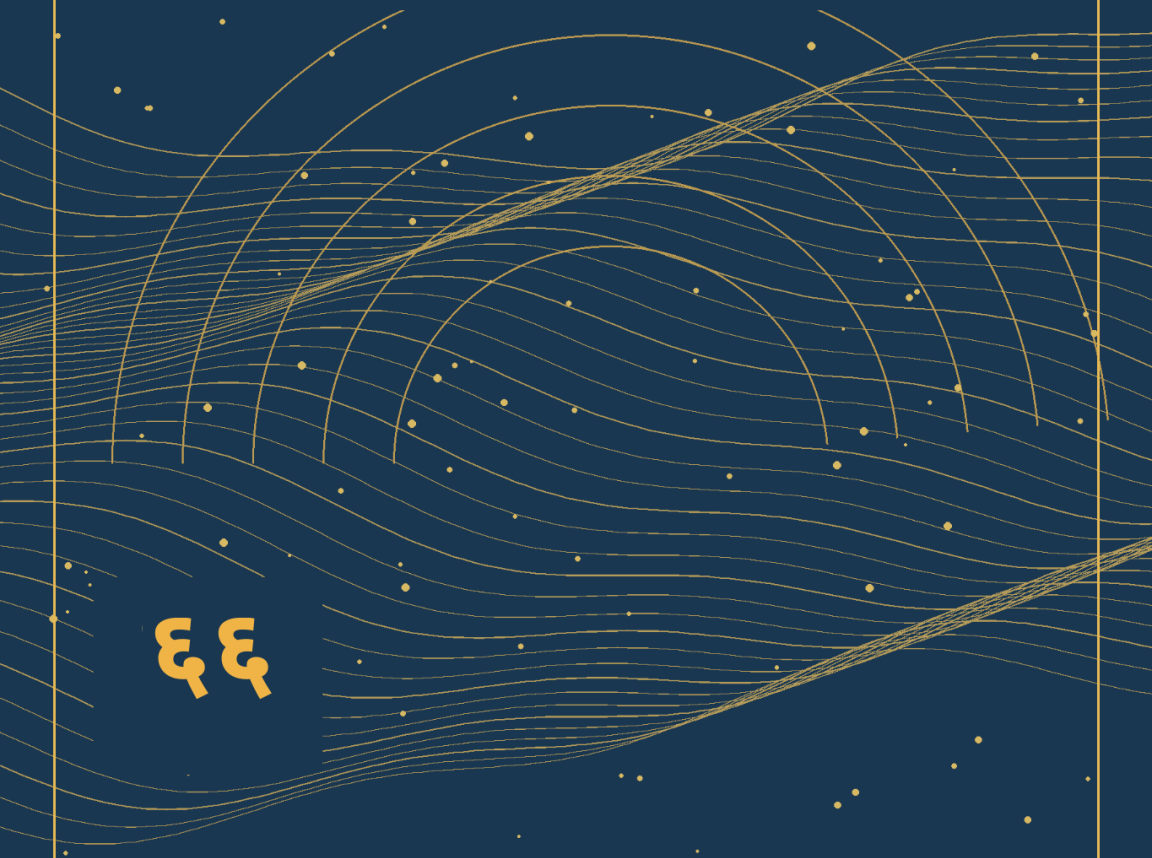

आशीष अनचिन्हार

विदेह । आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६६

‘नित नवल कुणाल’ : लोकनाट्य, पदावली आ रंगचेतना

समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

विदेह · २०२६

साहित्यिक समीक्षा आ सम्पादकीय विवेचन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ६६। समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार।

समीक्षाधीन पोथी : गजेन्द्र ठाकुर। ‘नित नवल कुणाल’। २०२६।

प्रथम प्रकाशन : २०२६। भाषा : मैथिली। मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च।

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

सम्पादकीय भूमिका

मैथिली रंगमंचक लोकपरम्परा, पौराणिक नाट्यरचना, विद्यापतिक सम्पादित सय पद आ ‘रंगायन’क आलोचना गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल कुणाल’क विषय अछि। एहि खण्डमे ओहि आलोचनाक पद्धति आ निर्णय पुनःजाँचल गेल अछि।

नाटकक मुद्रित पाठ आ मंचीय प्रदर्शन, पदक काव्य-वक्ता आ ऐतिहासिक कवि, रंगसिद्धान्त आ वास्तविक दृश्य—ई भेद साहित्यिक अध्ययनमे निर्णायक अछि। एही कसौटी पर पुस्तकक उपलब्धि आ सीमा देखल गेल अछि।

समालोचनाक मूल आधार गजेन्द्र ठाकुरक उक्त प्रकाशित अध्ययन अछि। पुस्तकमे उपस्थित साहित्यिक व्याख्याक मूल्याङ्कन ओकर अपन पाठ-विन्यास, सन्दर्भ आ प्रमाणक अनुसार कएल गेल अछि। मूल पुस्तकक सम्पूर्ण पाठ एहि खण्डमे पुनर्मुद्रित नहि अछि।

विस्तृत अनुक्रमणिका : खण्ड ६६

१. 'नित नवल कुणाल' : आलोचनाक विस्तार आ ओकर चुनौती.....४
२. सात नाटकक स्थापत्य : लोकत्रयी आ प्रेमचतुष्टय.....४
३. 'चालिस चोर आ गोनू झा' : लोकबुद्धि आ अभिनयक भीतर अभिनय.....५
४. 'बिदापत' : लोकस्मृति, विद्यापति आ रंगसम्बाद.....६
५. 'कुसमा-सलहेस' : लोकगाथाक राजनीति.....६
६. प्रेमचतुष्टयक पहिल दू नाटक : प्रतिज्ञा आ विश्वास.....७
७. प्रेमचतुष्टयक अन्तिम दू नाटक : खोज आ परीक्षा.....८
८. रंगसिद्धान्तक बहुवचन : सम्भावना आ सावधानी.....८
९. विद्यापतिक सय पद : सम्पादकीय चयनक प्रश्न.....९
१०. पदक भाषा, रस आ स्त्रीक आवाज.....१०
११. 'रंगायन'क पैंतालीस प्रविष्टि : इतिहासक निर्माण.....१०
१२. पदवार गहनता आ सम्पादनक स्थायी प्रश्न.....११
१३. रंगसंस्कृतिक संस्था, भाषा आ दर्शक.....११
१४. शैली आ सम्पादकीय विन्यासक परीक्षा.....१२
१५. समेकित निर्णय.....१२

१३

१. 'नित नवल कुणाल' : आलोचनाक विस्तार आ ओकर चुनौती

गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल कुणाल' मैथिली रंगसाहित्यक एकटा विस्तृत आलोचनात्मक प्रयास अछि। विषय मात्र एक नाटककारक नाट्यलेखन नहि; सात नाटक, विद्यापतिक चयनित सय पदक सम्पादन-सम्बन्धी अध्ययन आ 'रंगायन'क पैंतालीस प्रविष्टिक समीक्षा—ई तीन क्षेत्र एक संग उपस्थित अछि। एहि विशाल विन्यासक कारण पुस्तकक प्रमुख प्रश्न बनैत अछि : लोकमंच, शास्त्रीय नाट्यविचार, काव्य-पाठ आ रंग-इतिहासक मापदण्ड कतेक दूरि समान रहि सकैत अछि? गजेन्द्र एहि विविधताकेँ एक सूत्रमे बान्हबाक प्रयास करैत छथि, मुदा भिन्न विधाक स्वतन्त्र प्रकृतिक संरक्षण सेहो जरूरी अछि।

कुणालक साहित्यक समीक्षा करैत गजेन्द्र केवल कथावस्तु सँ सन्तुष्ट नहि। हुनकर पद्धतिमे मंचनीयता, पात्र-संरचना, गीत, रस, सामाजिक सत्ता, भाषा आ विविध रंगसिद्धान्तक समानान्तर उपयोग अछि। ई परिश्रम मैथिली नाट्यालोचनाकेँ नूतन प्रश्न दैत अछि। तथापि बहुतेक सिद्धान्तक नाम एक संग उपस्थित कए देब मात्रसँ तर्क गम्भीर नहि होइत; प्रत्येक विचारधारा नाटकक कोन विशिष्ट दृश्य स्पष्ट करैत अछि, एकर परीक्षण आवश्यक अछि।

ई समीक्षा गजेन्द्र ठाकुरक पुस्तककेँ मूल नाटक अथवा विद्यापतिक पद-संग्रहक स्थानपर नहि राखैत। एतय मुख्य मूल्याङ्कन हुनकर आलोचनात्मक चयन, तुलनाक सार्थकता, पाठ-साक्ष्य आ निर्णयक स्वतन्त्रता पर आधारित अछि। विशाल ग्रन्थमे अल्प स्थलपर कएल गेल सूक्ष्म निर्णय कखनो पैघ सिद्धान्तक दोहरावसँ अधिक मूल्यवान होइत अछि।

२. सात नाटकक स्थापत्य : लोकत्रयी आ प्रेमचतुष्टय

गजेन्द्र संग्रह 'कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक'केँ दू रचनात्मक वृत्तमे पढ़ैत छथि। 'चालिस चोर आ गोनू झा', 'बिदापत' आ 'कुसमा-सलहेस' लोक आख्यान, गीत, सामूहिक अभिनय आ क्षेत्रीय रंगस्मृतिसँ जुड़ल अछि। आन चारि नाटक 'प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!', 'विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह', 'प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार' आ 'प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र' पौराणिक-आख्यानक पुनर्रचना करैत अछि। ई

विभाजन संग्रहक आन्तरिक असमानताकेँ कमी कहबाक बदला रचनात्मक भिन्नता मानैत अछि।

लोकत्रयीमे रंगमंचक समय गीत, संवाद आ समुदायिक स्मृतिसँ चलैत अछि। प्रेमचतुष्टयमे संक्षिप्त पात्र-विधान आ नैतिक परीक्षा बेसी प्रमुख होइत अछि। दुनूक मंचीय अपेक्षा भिन्न होएबाक कारण समान गति अथवा समान दृश्य-लम्बाईक मांग तर्कसंगत नहि। गजेन्द्र एहि अन्तरकेँ स्वीकार करैत छथि, मुदा संग्रहक कुछ संरचनात्मक सीमा—शीर्षकमे 'उर्फ'क बारम्बारता, कथा-गतितक असमानता, आदर्श नायकक सरलीकरण—पर आलोचनात्मक प्रश्न सेहो उठबैत छथि। ई आत्मनिर्भर विवेचन प्रशंसात्मक परिचयसँ आगू बढ़ैत अछि।

संग्रहक सातो नाटककेँ एक साथ पढ़ला पर लोककथा आ पौराणिक कथा दुनू रंगमंचक वर्तमान प्रश्न बनैत अछि। मुदा 'लोक'केँ एकसमान, निर्विवाद समुदाय मानब उचित नहि। लोकनायकक वैभवक पाछाँ जाति, श्रम, लिंग आ सांस्कृतिक स्वामित्वक प्रश्न उपस्थित रहैत अछि। गजेन्द्रक अध्ययन एहि टकरावकेँ कतिपय ठाम उजागर करैत अछि; शोधक अगिला चरणमे वास्तविक मंचनक दर्शक-प्रतिक्रिया जोडलासँ मूल्याङ्कन अधिक सन्तुलित होएत।

३. 'चालिस चोर आ गोनू झा' : लोकबुद्धि आ अभिनयक भीतर अभिनय

गोनू झाक लोकबुद्धि पर आधारित नाटकमे चोर आ ज्ञानक सम्बन्ध सामान्य नैतिक कथा बनि सकैत छल। गजेन्द्र एहि नाटककेँ रंगमंच अपन प्रक्रियाकेँ देखबैत अछि, एहन आत्मचेतन रचना रूपमे पढ़ैत छथि। अभिनयक भीतर अभिनय, लोककलाकारक जीविका, गमछा सन साधारण वस्तुक सांकेतिक उपयोग आ सामाजिक प्रतिष्ठाक असमानता आलोचनामे महत्त्व पबैत अछि। लोककथा मंचपर आबि कऽ केवल मनोरञ्जन नहि रहैत; ओ प्रश्न करैत अछि जे समाजमे ज्ञानक मान्यता के दैत अछि।

पुस्तकमे भारतीय, पाश्चात्य, चीनी आ इजरायली रंगविचारक समानान्तर प्रयोग एहीं नाटकसँ आरम्भ होइत अछि। विविध रंगपरम्पराक सहायता सँ दृश्यकेँ देखब उपयोगी अछि, बशर्ते प्रत्येक दृष्टि नया अर्थ खोलय। जँ चारू सिद्धान्तक निष्कर्ष अन्तमे एके 'लोकबुद्धिक विजय' हो, तँ तुलनाक अन्तर घटि जाएत। समीक्षक लेल आवश्यक अछि जे कुन सिद्धान्त पात्रक क्रिया, कोन दर्शक-दूरी आ कोन नैतिक सम्बन्धकेँ सर्वाधिक स्पष्ट करैत अछि।

गजेन्द्र नाटकक कमजोर पक्षमे अत्यधिक आत्मसन्दर्भ आ चोर-पात्रक सीमित अन्तरतमक प्रश्न उठबैत छथि। एहि टिप्पणीकेँ गम्भीरतासँ लेबाक चाही। खलपात्र केवल उपहासक साधन रहि जाए तँ गोनू झाक बुद्धिक नैतिक विजय सहज भऽ जाइत अछि। चुनौतीपूर्ण प्रतिपक्ष बिनु चातुर्यक मूल्य पूरा स्पष्ट नहि होइत। ई चर्चा पुस्तकक आलोचनात्मक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

४. 'बिदापत' : लोकस्मृति, विद्यापति आ रंगसम्बाद

'बिदापत'क अध्ययनमे गजेन्द्र लोकनाट्यक जीवित परम्परा आ विद्यापतिक सांस्कृतिक छवि बीच अन्तर देखैत छथि। ऐतिहासिक कवि, लोकक कल्पना आ मंचीय पात्र एके वस्तु नहि। रंगमंच इतिहासक तथ्यकेँ पुनर्सृष्ट करैत अछि, मुदा ओकर स्वतन्त्रता असीम नहि; नाम, काल आ चरित्रक पहचान पर दर्शक एकटा ऐतिहासिक विश्वास सेहो बनबैत अछि। गजेन्द्र एही दोहरी जिम्मेदारीकेँ आलोचनाक आधार बनबैत छथि।

बिदापत-नाचक गीत, हास्य, रूपान्तरण आ लोकाभिनय पाठ्यग्रन्थक स्थिर संवादसँ अधिक विस्तृत संसार बनबैत अछि। एहि कारण नाटकक केवल मुद्रित पाठसँ मंचक सम्पूर्ण परिणाम निर्धारित नहि कएल जा सकैत। संगीतक चाल, कलाकारक देह, दर्शकक परिचय आ स्थानीय बोली अर्थनिर्माणमे सहभागी अछि। गजेन्द्रक समीक्षा एहि तथ्यकेँ पहिचानैत अछि, यद्यपि प्रत्यक्ष मंचन-साक्ष्यक अभाव सीमाक रूपमे मौजूद अछि।

नाटकक कतिपय प्रसंगमे हास्य-संकेत कथ्यकेँ आगाँ बढ़ेबाक बदला ओकर गति रोकि दैत अछि कि नहि, से प्रश्न आलोचक उठबैत छथि। 'उगना' सम्बन्धी लोकस्मृतिक अपूर्णता आ ऐतिहासिकता–काव्यता द्वन्द्वक चिन्हांकन उपयोगी अछि। हर सांस्कृतिक कथा पहिने सँ पूर्ण रूपमे दर्शक जानैत होथि, एहन मानि नाटकक आवश्यक सम्बन्ध छोड़ि देब कमजोर मंचीय निर्णय भऽ सकैत अछि।

५. 'कुसमा-सलहेस' : लोकगाथाक राजनीति

'कुसमा-सलहेस' मे लोकनायकक कथा प्रेम, प्रतिरोध, जातीय स्मृति आ सार्वजनिक प्रदर्शनक संग अबैत अछि। गजेन्द्रक आलोचना नाटककेँ लोकगाथाक सजावट नहि, लोकसमुदायक आत्मछवि बनबाक स्थल मानैत अछि। मिथिलाक सलहेस-नाचक सम्बन्धमे रचना पढ़ैत समय गीतक कार्य, दलक सामूहिकता आ लोकनायकक नैतिक दायरा केन्द्रमे रहैत अछि।

लोकपात्रक स्मृति कागजमे बंद नहि; हर प्रदर्शन ओकर अर्थमे नूतन हस्तक्षेप करि सकैत अछि।

एहि नाटकक ऐतिहासिक महत्त्वक चर्चा करैत सामाजिक मानचित्रक प्रश्न सजीव होइत अछि। लोकनायकक लोकप्रसिद्धि आ ओकर ऐतिहासिकता बराबर नहि। मौखिक आख्यानमे समुदाय अपन अपेक्षा, स्मृति आ दुःखक रूप बनबैत अछि। गजेन्द्र जखन कथा-अन्तर आ प्रमाणक भेद स्वीकार करैत छथि, तखन अध्ययन अधिक विश्वसनीय होइत अछि। मुदा खलपात्र एकरेखीय बनि जाए अथवा भूगोलक अनावश्यक विस्तार कथाक केन्द्र खसका दे, एहन स्थिति पर आलोचनात्मक असहमति व्यक्त करब जरूरी अछि।

सलहेसक जीवनकेँ केवल सामान्य मानवीय 'प्रेमक विजय'मे विलीन करबासँ लोकगाथाक सामाजिक विशिष्टता घटि सकैत अछि। जातीय अनुभवक प्रत्यक्ष रूप, समुदायिक गायन आ इतिहासक उपेक्षाक प्रश्न सामने राखब एहि नाटकक आलोचनाकेँ सामाजिक गम्भीरता दैत अछि। गजेन्द्रक पुस्तक एहि बहसक आवश्यक प्रवेशद्वार अछि।

६. प्रेमचतुष्टयक पहिल दू नाटक : प्रतिज्ञा आ विश्वास

'प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!' मे स्त्रीक स्वीकृति, प्रेमक स्थिरता आ अग्नि-परीक्षाक नैतिक अर्थ प्रमुख अछि। गजेन्द्र नायक-नायिकाक कथावस्तु कहि मात्र नहि रुकैत; 'जय' शब्दक अर्थ आ स्त्री-आत्मनिर्णयक सीमापर प्रश्न करैत छथि। स्त्रीक त्याग आ निष्ठाक महिमा जँ समाजक एकतरफा अपेक्षा बनि जाए तँ प्रेमक स्वाधीनता घटैत अछि। एही कारण अग्नि-प्रवेशक दृश्यकेँ नारीवादी उपलब्धिक सरल प्रमाण मानब उचित नहि।

'विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह'मे सुकन्या-च्यवन सम्बन्ध, आयु-अन्तर आ अश्विनी कुमारक प्रसंग नाटकक नैतिक केन्द्र बनैत अछि। गजेन्द्र विश्वास शब्दक महिमा सँ अधिक ओकर परिस्थितिजन्य अर्थ पूछैत छथि। नैतिकता प्रायः त्यागक पाठमे बदलि जाइत अछि; मुदा सम्बन्धमे स्वेच्छा आ असमान शक्ति स्थितिक प्रश्न उभरल चाही। विश्वास केकर आ किनका प्रति अछि, ई प्रश्न नाटकक अन्तिम निर्णयक पुनर्पाठ करबैत अछि।

दूनू नाटकक आलोचनामे शास्त्रीय रस-विचार सँ अधिक जीवित प्रश्न पाठकेँ तखन भेटैत अछि जखन दृश्य स्वयं नैतिक दुविधा उत्पन्न करैत अछि। गजेन्द्रक अनेक सैद्धान्तिक चर्चा एहि दुविधाकेँ विस्तार दैत अछि, किन्तु कतिपय प्रसंगमे

सिद्धान्तक नाम सामग्रीसँ अधिक ठाम लेइत अछि। समीक्षा-अनुशासन ई मांग करैत अछि जे नाटकीय दृश्य सदा सिद्धान्तसँ पहिने रहय।

७. प्रेमचतुष्टयक अन्तिम दू नाटक : खोज आ परीक्षा

'प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार'क शीर्षक स्वयं प्रेमकेँ व्यक्तिगत प्राप्तिसँ आगू नूतन सम्बन्धक खोज मानबाक संकेत दैत अछि। गजेन्द्र श्वेता आ अतिरथक सम्बन्धकेँ स्वतंत्र निर्णयक प्रश्नसँ जोड़ैत छथि। प्रेमक विस्तार कतहु स्त्रीक इच्छा आ पुरुषक वर्चस्वक दूरीकेँ कम करैत अछि कि नहि, से नाटकीय क्रियासँ परखल जाए। कथाकारक इच्छित आदर्श आ पात्रक वास्तविक विकल्पक बीच भेद राखब आलोचनाक जरूरी काज अछि।

'प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र' निष्ठा आ देहसम्बन्धी सामान्य पूर्वाग्रहक पुनर्परीक्षा करबाक अवसर दैत अछि। गजेन्द्र एहि नाटककेँ प्रेमचतुष्टयक अन्तिम बिन्दु रूपमे पढ़ैत छथि। परीक्षा शब्दक नैतिक भार बहुत पैघ अछि—ककर परीक्षा, कोन अधिकारसँ, कोन परिणाम पर? जँ प्रश्न एकतरफा अछि तँ प्रेमक विजय असमानताकेँ ढाँकि सकैत अछि। एहि दृष्टिसँ नाटकक जीवनमूल्यक चर्चा अधिक जटिल आ उपयोगी बनैत अछि।

चारू नाटकक सामूहिक मूल्याङ्कनमे आदर्श प्रेमक दोहराव आ पात्रक विशिष्ट आवाजक अन्तर पहचानल जाए। गजेन्द्रक पुस्तक एतय प्रशंसा आ आलोचनाक दू स्वर राखैत अछि। तखन नाट्यरचना नीतिवचनक अन्तिम रूप नहि, संघर्षरत पात्रक जीवित मंच बनैत अछि।

८. रंगसिद्धान्तक बहुवचन : सम्भावना आ सावधानी

भारतीय नाट्यविचार, पाश्चात्य रंगशास्त्र, चीनी प्रदर्शन-दृष्टि आ इजरायली वैचारिक सन्दर्भक उपयोग गजेन्द्र ठाकुरक आलोचनात्मक आकांक्षाकेँ व्यापक बनबैत अछि। तुलना कएलासँ स्वयं अन्तर-सांस्कृतिक विशेषज्ञता सिद्ध नहि होइत; ऐतिहासिक परिस्थिति, रंगमंचक संस्था आ विचारक विशिष्ट पदावलिक समुचित पहचान आवश्यक अछि। एक परम्पराक अवधारणाकेँ दोसर परम्पराक दृश्यपर लगबैत समय ओ अवधारणा वास्तवमे की स्पष्ट करैत अछि, तकर उदाहरण चाही।

एहि पुस्तकमे सैद्धान्तिक विस्तारक सबसँ व्यावहारिक लाभ ई अछि जे मैथिली नाटककेँ स्थानीय कहलाक कारण छोट नहि मानल गेल अछि। मिथिलाक लोकनाच वैश्विक रंगमंचक समकक्ष आलोचनात्मक संवादमे शामिल होइत

अछि। तथापि स्थानीय मंचक देहभाषा, दर्शक आ समयक विशिष्टता उधार लेल सिद्धान्तक पाछाँ नहि छूटय। सिद्धान्त पाठकें खोलय, पाठकें ओकर मिसाल बनाकऽ बन्द नहि करय।

नव्य-न्यायक प्रयोगक प्रसंगमे सेहो समान सावधानी अछि। प्रमाण, अभाव अथवा अनुमानक संकल्पना रंगमंचक विवाद समझेबामे उपयोगी होय सकैत अछि; मुदा शास्त्रीय तर्कक कोटिकेँ साहित्यिक रूपकसँ अलग स्पष्ट करब चाही। गजेन्द्रक प्रयास नव शोधक सम्भावना खोलैत अछि, आ ओकर सफलताक कसौटी पद्धतिक स्पष्टता रहत।

९. विद्यापतिक सय पद : सम्पादकीय चयनक प्रश्न

कुणाल सम्पादित 'विद्यापतिक १०० पद : जुवती भए जनमए जनु कोइ' पर गजेन्द्रक विस्तृत अध्याय पुस्तकक दोसर पैघ केन्द्र अछि। पद १–७०कें 'स्त्री-मोन' आ ७१–१००कें 'कवि-मोन'क ढाँचामे अध्ययन कएल गेल अछि। एहि रचना-योजनासँ पाठक पदक स्वर, कथ्य आ भाषिक भाव-प्रवाहकेँ क्रमिक रूपेँ देखैत छथि। मुदा सम्पादकक चयनक विवेचन करैत समय मूल पदपरम्पराक व्यापकता आ चयनित सय पदक सीमा स्पष्ट राखब अनिवार्य अछि।

'स्त्री-मोन' नामक अन्तर्गत नायिकाक बोल, संकोच, आकांक्षा आ प्रतिरोधक आलोचनात्मक सम्भावना अछि। एहि शब्दकेँ कोनो एकरूप सार्वभौम स्त्री-अनुभव नहि बुझबाक चाही। पदक वक्ता, काव्यपरम्परा आ मंचीय गेयताक भेद अपन अर्थ बनबैत अछि। गजेन्द्र प्रत्येक पद अलग पढ़बाक परिश्रम करैत छथि; एहि श्रमक महत्त्व अछि। किन्तु पदवार टिप्पणीक संख्या बढ़लासँ हर पदक नव आलोचनात्मक अर्थ स्वतः सुनिश्चित नहि होइत। पाठकें स्वतंत्र निर्णय देनिहार विशेष बिम्ब, क्रिया वा ध्वनिक साक्ष्य आवश्यक अछि।

'कवि-मोन'क अन्तर्गत कविताक आत्मचेतना, भक्ति, लौकिक भाव आ शास्त्रीय परम्पराक अन्तर उभरैत अछि। कविक ऐतिहासिक व्यक्तित्वकेँ पदक प्रत्येक 'हम' अथवा 'अहाँ' सँ सीधा जोड़ेब जोखिमपूर्ण अछि। गजेन्द्रक चर्चा एकरे कारण काव्य-वक्ता आ वास्तविक रचनाकारक दूरी स्वीकार करैत अछि। ई सावधानी मैथिली पद-समीक्षाक लेल विशेष आवश्यक अछि।

१०. पदक भाषा, रस आ स्त्रीक आवाज

विद्यापतिक पदक गेयता लिखित पंक्तिक मात्रागणनासँ पूर्ण नहि बुझल जा सकैत। स्वर, ताल, उच्चारण आ प्रदर्शन पदकेँ नूतन अनुभव बनबैत अछि। गजेन्द्र भाषा आ छन्दक प्रश्नक संग नायिका-विधान आ रसक परम्परा जोड़ैत छथि। ई सम्मिलन उचित अछि, मुदा साहित्यक स्त्रीस्वरकेँ केवल शृङ्गार-रसक प्रमाण मानब पाठक बहुवचन घटा सकैत अछि। नायिका कखन प्रश्न करैत छथि, कखन स्वीकृति दैत छथि, आ कखन सामाजिक मर्यादा कैँ बदलैत छथि, से विशिष्ट पदक बिम्बसँ बुझबाक चाही।

शैव, वैष्णव, लौकिक आ नीतिपरक स्वरक भेद समीक्षामे उपयोगी अछि। भक्ति आ प्रेमक सम्बन्ध एक अर्थक स्थिर अनुवाद नहि; पदविशेषक सन्दर्भ निर्णायक अछि। सम्पादनक स्तरपर पाठान्तर, पदक क्रम, कठिन शब्दक अर्थ आ प्रमाणित पाठक स्रोतक जानकारी अधिक विस्तृत रूपेँ भेटय तँ विवेचनक पुनःपरीक्षा सहज होयत। गजेन्द्रक अध्ययन एहि प्रकारक अगिला सम्पादकीय काज लेल महत्त्वपूर्ण आधार बनबैत अछि।

११. ‘रंगायन’क पैंतालीस प्रविष्टि : इतिहासक निर्माण

‘रंगायन’क पैंतालीस प्रविष्टिक समीक्षा कुणालक रंगविचारकेँ सात नाटकसँ व्यापक परिप्रेक्ष्यमे राखैत अछि। लोकनाट्य, प्रदर्शन, रंगभाषा, क्षेत्रीय रंगसंस्था आ साहित्यक जनसम्पर्क एतय एकत्र अछि। गजेन्द्र छोट-बड़ प्रविष्टिक अलग विषयक पर ध्यान दैत छथि। संग्रहक समग्र स्वरूपकेँ केवल ‘मैथिली रंगमंचक इतिहास’ कहब पर्याप्त नहि; कतिपय आलेख विचारप्रधान, कतिपय संस्मरणात्मक, कतिपय अभ्यास आ मंचन-सम्बन्धी होइत अछि।

रंगइतिहास लिखबाक लेल नाटकक मुद्रित प्रकाशन, पहिल मंचन, रंगदल, अभिनेता, निर्देशकीय चयन, दर्शक आ समीक्षाक पृथक प्रमाण चाही। लेखकक स्मृति उपयोगी अछि, मुदा स्वतः सम्पूर्ण संस्थागत इतिहास नहि। गजेन्द्र जखन लेखसभक विवरणक समीक्षा करैत छथि, तखन ई प्रश्न महत्त्वपूर्ण बनैत अछि जे व्यक्तिक निजी अनुभवसँ सामूहिक रंगसंस्कृतिक इतिहास धरि कोना पहुँचल जाए। भविष्यक क्षेत्रीय शोधमे पुरान कार्यक्रमपत्र, विज्ञापन, पत्रिका आ सहभागी कलाकारक साक्षात्कार जोडल जाए।

‘रंगायन’क समीक्षामे भाषा-अस्मिताक प्रश्न सेहो केंद्रीय अछि। मैथिली मंचक संकट केवल संसाधनक नहि; दर्शकक भाषिक अवसर, शिक्षण-संस्था, नगरक सांस्कृतिक स्थल आ लोकनाटकक जीविका पर निर्भर अछि। रंगचेतनाकेँ सौन्दर्यमूलक आ सामाजिक संस्था दूनू रूपमे देखब गजेन्द्रक अध्ययनक स्थायी योगदान अछि।

१२. पदवार गहनता आ सम्पादनक स्थायी प्रश्न

सय पदक पृथक मूल्याङ्कनमे केवल भावार्थ आ रसक नाम लिखल जाए तँ आलोचना पाठककेँ नव जानकारी कम दैत। गजेन्द्रक विस्तृत विभागमे पदक वक्ता, संबोधन, नायिकाक स्थिति आ भाषिक रूप बारम्बार विचाराधीन अछि। विशेष रूपसँ ‘स्त्री-मोन’क श्रेणी चयनित पदसभक पढ़बाक एक व्याख्यात्मक दृष्टि अछि; एकरा विद्यापतिक सम्पूर्ण रचनाक निर्विवाद वर्गीकरण नहि मानल जाए। पदसम्पादनक पाठान्तरक उपस्थिति आ पदक कालबोध बिना अर्थनिर्णय अन्तिम नहि।

पदक गेय परम्पराक प्रश्न सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। एकहि पाँति पाठमे लयात्मक आ प्रदर्शनमे भावात्मक रूपसँ भिन्न असर दे सकैत अछि। गजेन्द्रक विवेचनकेँ जँ छन्दक उल्लेखसँ आगे स्वर-परम्पराक सन्दर्भसहित पढ़ल जाए, तँ रूप आ विषयक सम्बन्ध खुलैत अछि। आलोचनाकेँ मंच वा गायनक अनुमान आ प्रत्यक्ष साक्ष्य बीच सीमा सदैव मानबाक चाही।

१३. रंगसंस्कृतिक संस्था, भाषा आ दर्शक

‘रंगायन’क प्रविष्टिसभ केवल काव्यात्मक रंगचिन्तन नहि, मैथिली भाषाक सार्वजनिक उपस्थिति पर चर्चा करबाक अवसर अछि। रंगदलकेँ स्थल चाही, कलाकारकेँ प्रशिक्षण, दर्शककेँ भाषा सँ लगाव, आ नाटककेँ प्रस्तुति लेल आर्थिक आधार। एहि कारण नाट्य-इतिहासक पुस्तकमे प्रकाशन-वर्षसँ बेसी संस्था, कार्यक्रमपत्र आ मंचस्थलक अभिलेख मूल्यवान होएत। गजेन्द्र एहि प्रश्नसभक पृष्ठभूमि बनबैत छथि।

लोकनाच आ आधुनिक रंगमंचक सम्बन्ध प्रतिस्पर्धाक मात्र नहि। लोकप्रदर्शनक सहज लय आधुनिक रंगभाषाकेँ नूतन साधन दे सकैत अछि, तखन आधुनिक प्रकाश, ध्वनि आ मंचप्रविधि लोकगाथाक प्रस्तुति बदलि सकैत अछि। एहि आदान-प्रदानमे भाषा आ समुदायिक पहचान सुरक्षित राखबाक प्रश्न आवश्यक

अछि। कुणालक लेखन पर गजेन्द्रक समीक्षा एहि सांस्कृतिक संवादक उर्वरता देखबैत अछि।

१४. शैली आ सम्पादकीय विन्यासक परीक्षा

‘नित नवल कुणाल’क विस्तारक एक लाभ पाठकक समक्ष सामग्रीक क्रमबद्ध उपलब्धता अछि। सातो नाटक, सय पद आ पैंतालीस आलेख अलग-अलग आलोचनात्मक एकाइ बनि कऽ उपस्थित अछि। एकर साथ समस्यासभ सेहो अछि : समान सैद्धान्तिक चौखट पुनःपुनः उपयोग भेलासँ कखनो दृश्यविशेषक भिन्नता ढँक जाइत अछि; पदवार नोटमे विवरणक पुनरावृत्ति आलोचनाक गति कम करि सकैत अछि; रंगइतिहासक निष्कर्षक लेल बाहरी प्रमाण पर्याप्त नहुँ भेटि सकैत अछि।

आलोचनाक विस्तृतता आ आलोचनाक गहनता एके वस्तु नहि। किछु नाटकमे दू वास्तविक विरोधी दृश्यक तुलना बीस सामान्य टिप्पणीसँ अधिक अर्थ दऽ सकैत अछि। गजेन्द्रक पुस्तक परिश्रमक प्रमाण अछि; ओकर अगिला संशोधित रूपमे प्रमुख स्थापना, विरोधी पाठ आ ठोस मंचीय उदाहरणकेँ अधिक दृश्य बनाओल जा सकैत अछि। एतहि समीक्षाक सृजनात्मक भूमिका अछि।

१५. समेकित निर्णय

गजेन्द्र ठाकुरक ‘नित नवल कुणाल’ मैथिली नाट्यालोचनाक महत्त्वाकांक्षी ग्रन्थ अछि। ई लोकगाथाक मंचीय रूप, पौराणिक प्रेमक नैतिक प्रश्न, विद्यापति-पदक सम्पादकीय वर्गीकरण आ रंगसंस्थाक इतिहासकेँ एक आलोचनात्मक परिधिमे अनैत अछि। सबसँ सबल पक्ष अछि विस्तृत पाठसाक्ष्यक संग विधागत बहुलताक स्वीकार; सबसँ चुनौतीपूर्ण पक्ष अछि सैद्धान्तिक विस्तार आ विशिष्ट उदाहरणक समन्वय।

आशीष अनचिन्हारक एहि समीक्षाक निर्णय ई अछि जे एहन कृति मैथिली साहित्यक शोधकेँ लाभ दैत अछि, कारण ओ नाटककेँ पाठ्यपुस्तकक विषय मात्र नहि रहने दैत। मुदा लोकमंचक वास्तविक इतिहास, प्रदर्शनक प्रमाण आ स्रोतभेदक पुनःजाँच जारी रहबाक चाही। नाटकक प्राण अभिनयमे अछि; आलोचनाक प्राण स्पष्ट, प्रमाणसमर्थ प्रश्नमे। गजेन्द्रक पोथी एहि दुनूक संवादक महत्त्वपूर्ण प्रारम्भ अछि।

सन्दर्भ-सूची

ठाकुर, गजेन्द्र। नित नवल कुणाल। विदेह, २०२६। (समीक्षाधीन मुख्य पोथी)।

गजेन्द्र ठाकुरक उक्त ग्रन्थमे विचाराधीन प्रमुख रचनासभ :

१. कुणाल। कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक।

२. कुणाल (सम्पा.)। विद्यापतिक १०० पद : जुवती भए जनमए जनु कोइ।

३. कुणाल। रंगायन।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-६६

सात नाटक आ मंचीय लोकपरम्पराक विस्तृत आलोचना
विद्यापतिक एक सय पदक क्रमिक अध्ययन
‘रंगायन’क पैंतालीस प्रविष्टिक समीक्षा
मैथिली साहित्यक स्रोताधारित समीक्षाक व्यापक प्रस्तुति।

मूल पाठ विस्तृत आलोचना सम्पादकीय चयन

विदेह

विदेह डिजिटल संग्रह

© 2026 Gajendra Thakur / Preeti Thakur